मगरमच्छ की कहानी

फिलिपीन्स की लोककथा

मगरमच्छ की कहानी

फिलिपीन्स की लोककथा

मगरमच्छ की कहानी

फिलिपीन्स की लोककथा

होसे, हिंदी : विदूषक

एक दिन जुआन नदी के पास घूम रहा था.
तभी उसे किसी के रोने की आवाज़ सुनाई दी.

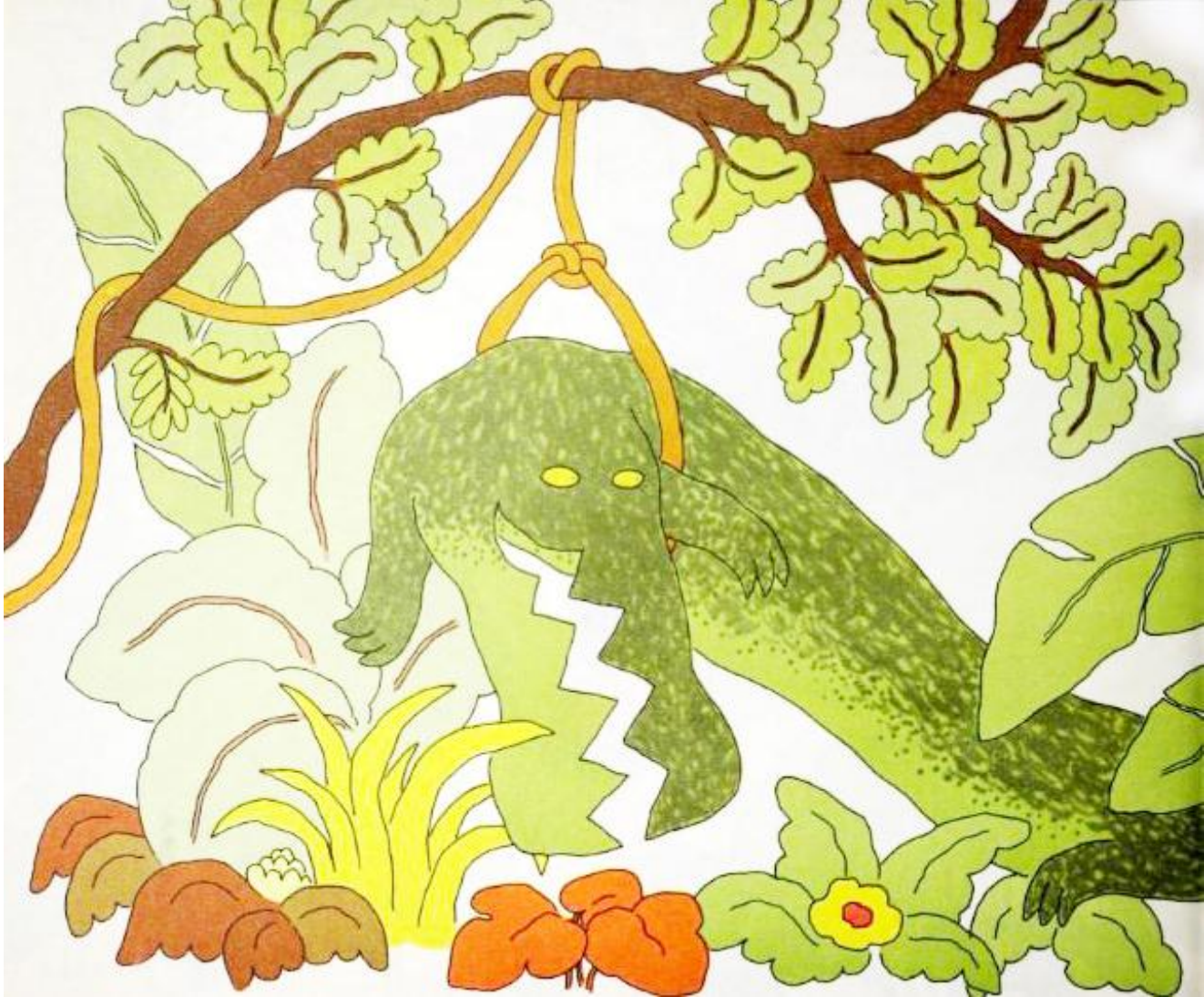

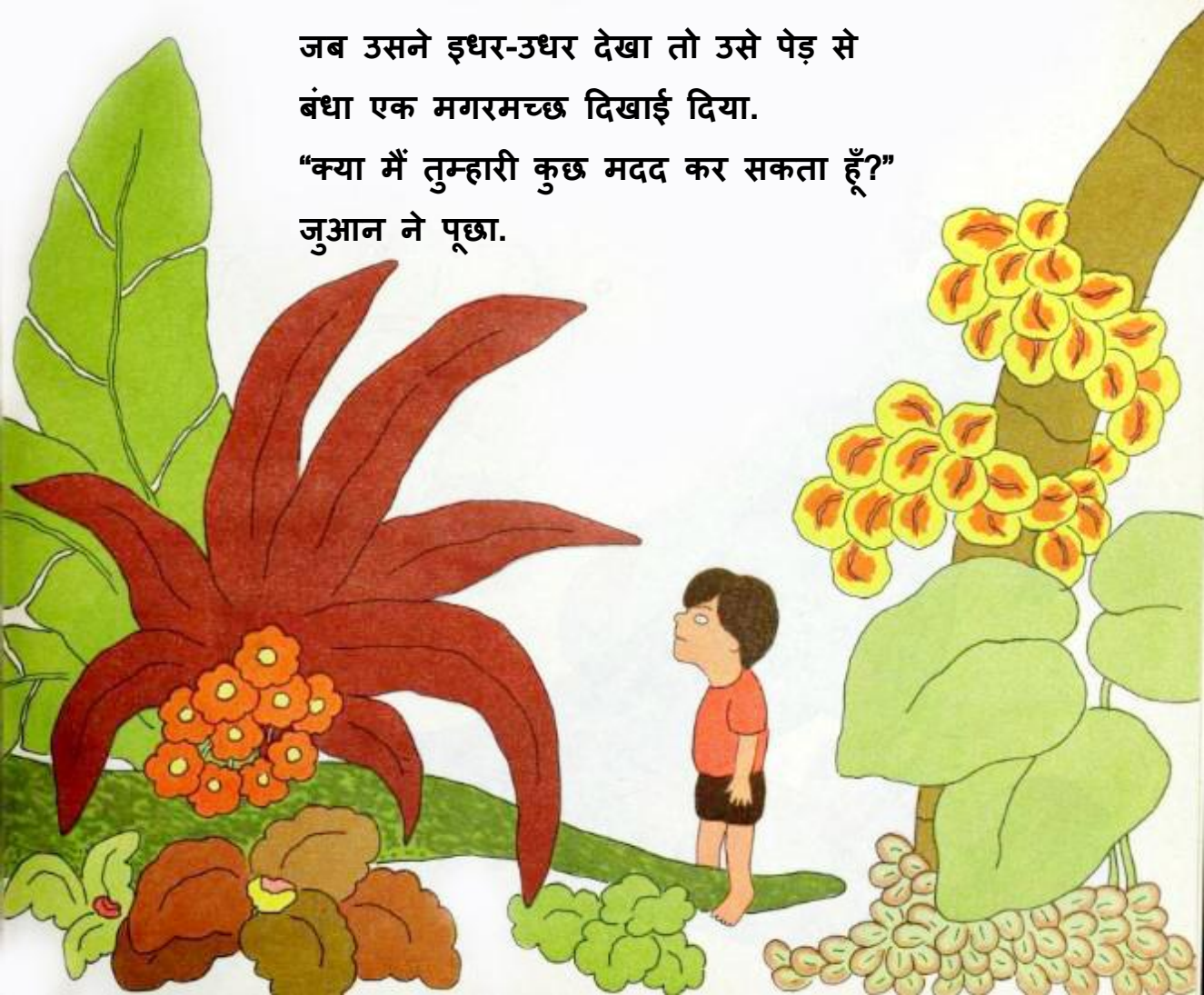

जब उसने इधर-उधर देखा तो उसे पेड़ से
बंधा एक मगरमच्छ दिखाई दिया.
“क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकता हूँ?”
जुआन ने पूछा.

“अगर तुम इस रस्सी के फंदे को खोल दो तो मैं तुम्हें एक सोने की अंगूठी दूंगा,” मगरमच्छ ने कहा.

फिर जुआन ने मगरमच्छ का रस्सी का फंदा खोल दिया.

“अब मुझे अंगूठी दो?”

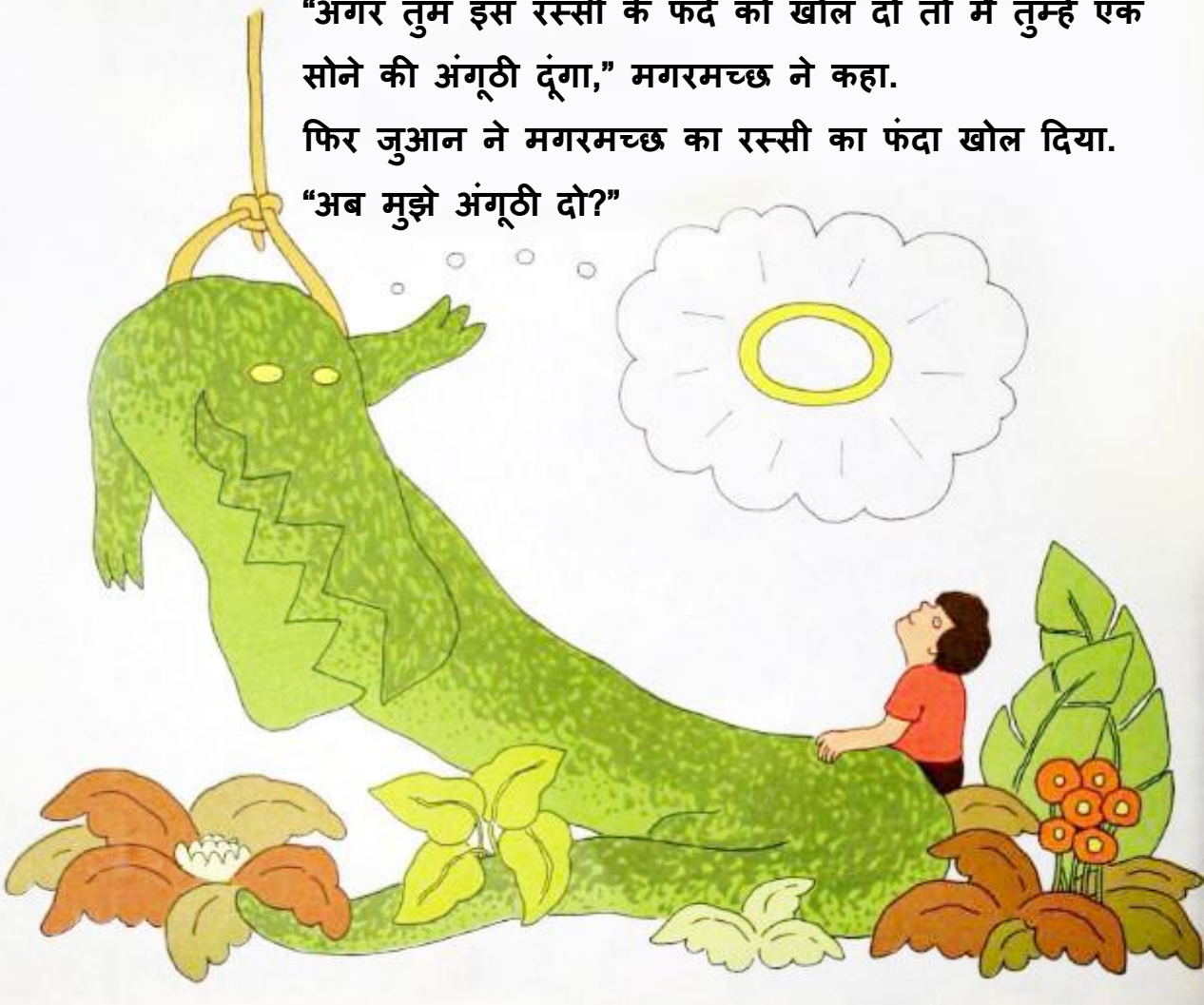

“अंगूठी अभी मेरे पास नहीं है,” मगरमच्छ ने कहा.
“मेरी पीठ पर बैठो फिर हम जाकर अंगूठी लेकर आयेंगे.”

नदी के बीच में पहुंचने के बाद मगरमच्छ ने कहा,
“मेरे पास सोने की कोई अंगूठी नहीं है. अब मैं तुम्हें खा जाऊँगा!”

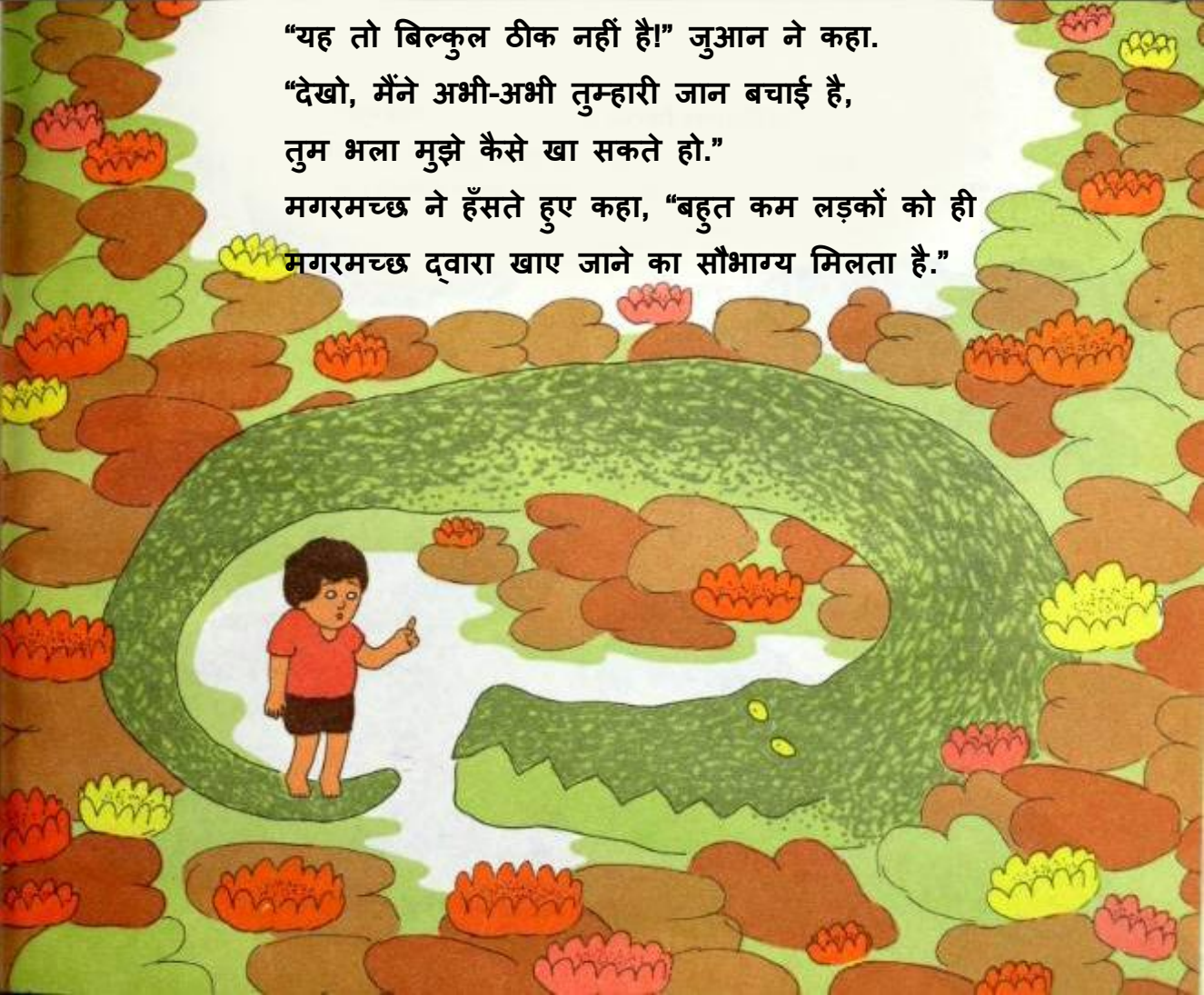

"यह तो बिल्कुल ठीक नहीं है!" जुआन ने कहा.
"देखो, मैंने अभी-अभी तुम्हारी जान बचाई है,
तुम भला मुझे कैसे खा सकते हो."
मगरमच्छ ने हँसते हुए कहा, "बहुत कम लड़कों को ही
मगरमच्छ द्वारा खाए जाने का सौभाग्य मिलता है."

तभी वहां एक पुरानी टोकरी तैरती हुई आई.

“चलो, टोकरी से पूछते हैं कि क्या तुम्हारा मुझे खाना ठीक होगा,” जुआन ने प्रार्थना की.

“ठीक है, पूछ कर देखो,” मगरमच्छ ने अपनी सहमति जताई.

“टोकरी, टोकरी,” जुआन ने पूछा. “शायद हम दोनों के बीच के झगड़े को तुम सुलझा सको. सुबह मुझे यह मगरमच्छ एक फंदे में फंसा हुआ दिखा. छुड़ाने के लिए उसने मुझे एक सोने की अंगूठी देने का वादा किया. पर जब मैंने फंदा खोला तो उसने मुझे अंगूठी नहीं है. अब वो मुझे खाने को तैयार है. क्या तुम इसे आभार व्यक्त करना कहोगे?”

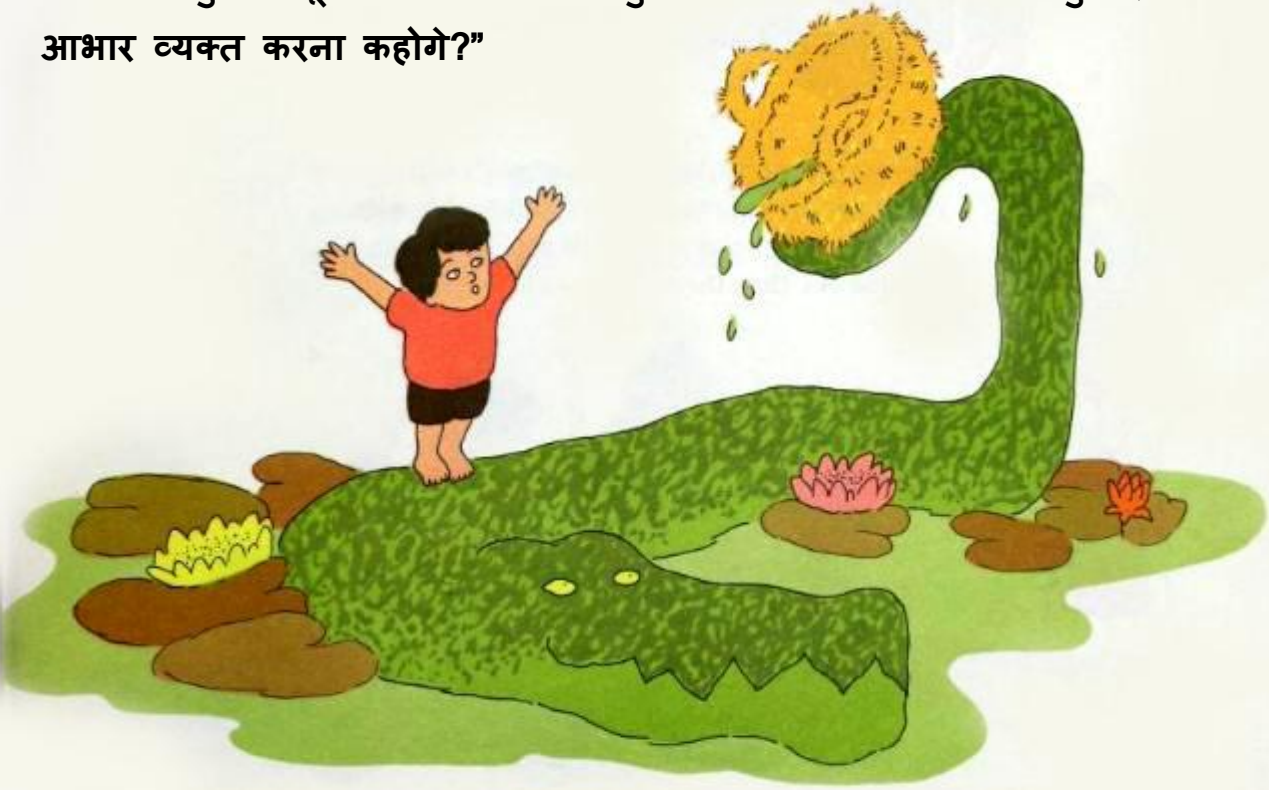

“देखो, जब मैं बिल्कुल नई थी,” टोकरी ने कहा, “तो मैं अपने मालिक के लिए बाज़ार से चावल लाती थी. मैं उसकी पत्नी के लिए फल लाती थी. मैं उनके बेटे के साथ खेलती थी. पर जब मैं बूढ़ी और पुरानी हो गई, तब उसने मुझे बाहर नदी में फेंक दिया.”

“लोग किसी के आभारी नहीं होते हैं, फिर भला तुम इस लड़के का आभार क्यों मानो? इस लड़के को जल्दी से खाकर ख़त्म करो,” टोकरी ने कहा.

“तुम्हारा बहुत धन्यवाद,” मगरमच्छ ने कहा. “मैं अभी इसे खाऊँगा.”

“नहीं!” जुआन जोर से चिल्लाया.
तभी उसे अपने पास एक टोपी तैरती हुई दिखी.
उसने तुरंत टोपी को बुलाया.

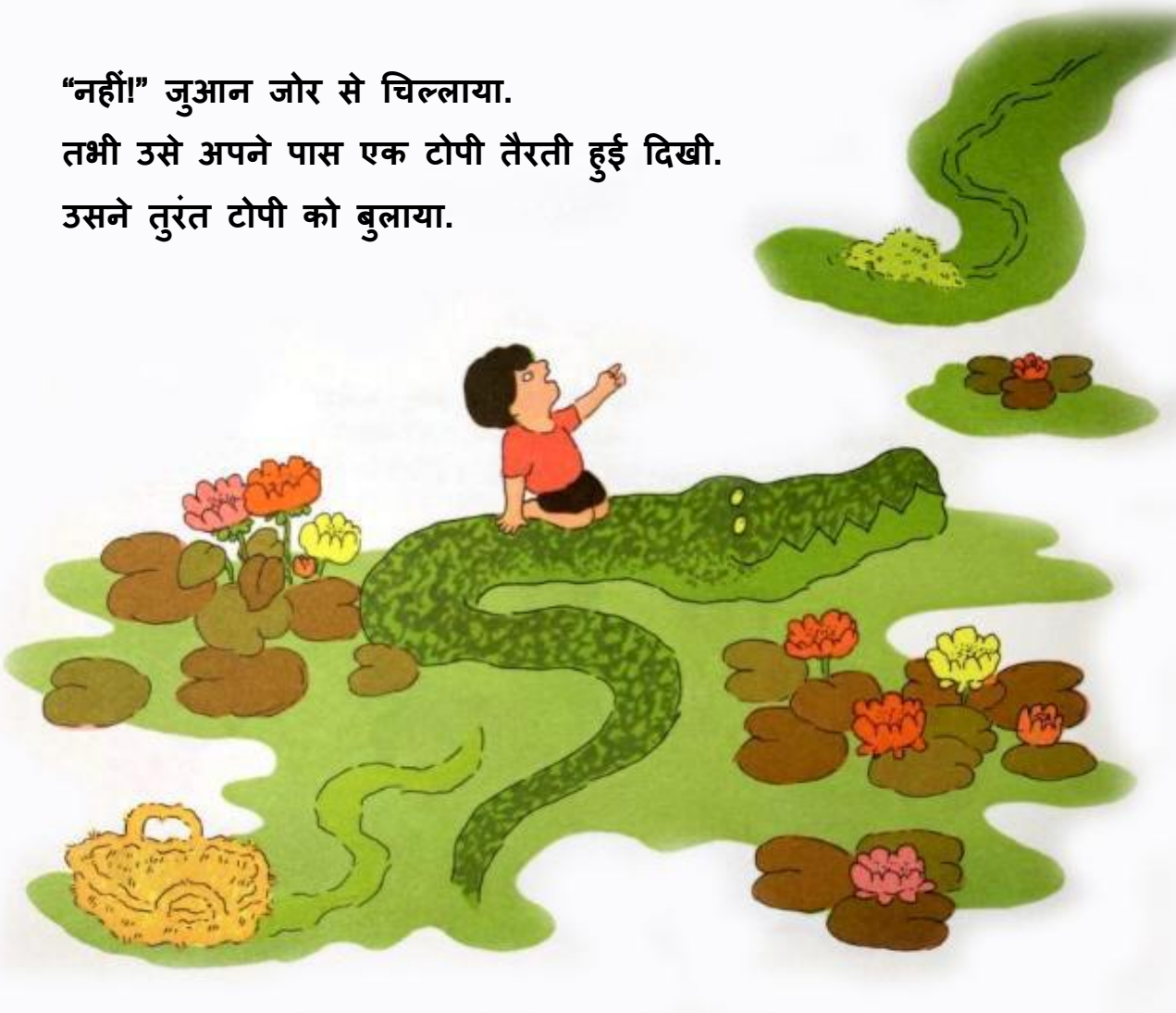

“क्या मामला है?” टोपी ने पूछा.

“यह मगरमच्छ एक फंदे में फंसा था जब मैंने उसे रोते हुए सुना,” जुआन ने कहा. “मैंने इस मगरमच्छ की जान बचाई, और अब वो मुझे खाना चाहता है. क्या यह बात ठीक है?”

“जब मैं नई थी तो मेरा मालिक रोज़ मुझे पहनकर गर्व से शहर जाता था. मैं धूप से उसकी रक्षा करती थी और बारिश में उसे भीगने से बचाती थी. पर जब मैं पुरानी हुई, तब उसने मुझे नदी में फेंक दिया.”

“लोग बड़े मतलबी होते हैं. वो किसी का आभार नहीं मानते हैं, फिर तुम इस लड़के का एहसान क्यों मानो? इस लड़के को झट से खा जाओ,” टोपी ने कहा.

मगरमच्छ ने जुआन से कहा, “सुना तुमने?” फिर उसने लड़के को निगलने के लिए अपना बड़ा मुंह खोला.

“नहीं! अभी नहीं!” जुआन ने कहा.

“चलो उस बन्दर से पूंछते हैं. वो उस केले के पेड़ पर बैठा है.”

“ठीक है, पर ज़रा जल्दी करो,” मगरमच्छ ने बेसब्री से कहा.

“यह तुम्हारा आख़िरी मौका है.”

“बन्दर, बन्दर!” जुआन ज़ोर से चिल्लाया.

“यह मगरमच्छ मुझे खाने वाला है!”

“मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा है!” बन्दर चिल्लाया.

“ज़रा मेरे पास में आओ.”

फिर मगरमच्छ नदी के किनारे तैरता हुआ गया.

जुआन फिर ज़ोर से चिल्लाया, “यह मगरमच्छ एक फंदे में फंसा था...”

मुझे अभी भी कुछ सुनाई नहीं दे रहा है!” बन्दर चिल्लाया.

“क्या तुम मेरे कुछ और नज़दीक नहीं आ सकते हो?”

मगरमच्छ गुस्से में बड़बड़ाया, “मैं बस इस लड़के को खाना चाहता हूँ.”

फिर मगरमच्छ तैरता हुआ नदी के बिल्कुल किनारे पहुंचा.

फिर क्या था.

जुआन तुरंत कूदा और नदी से ज़मीन पर आ गया.

अब वो सुरक्षित था.

“तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया,” उसने बन्दर से कहा.

“तुमने मेरी जान बचाई है, मैं हमेशा तुम्हारा एहसानमन्द रहूँगा.”

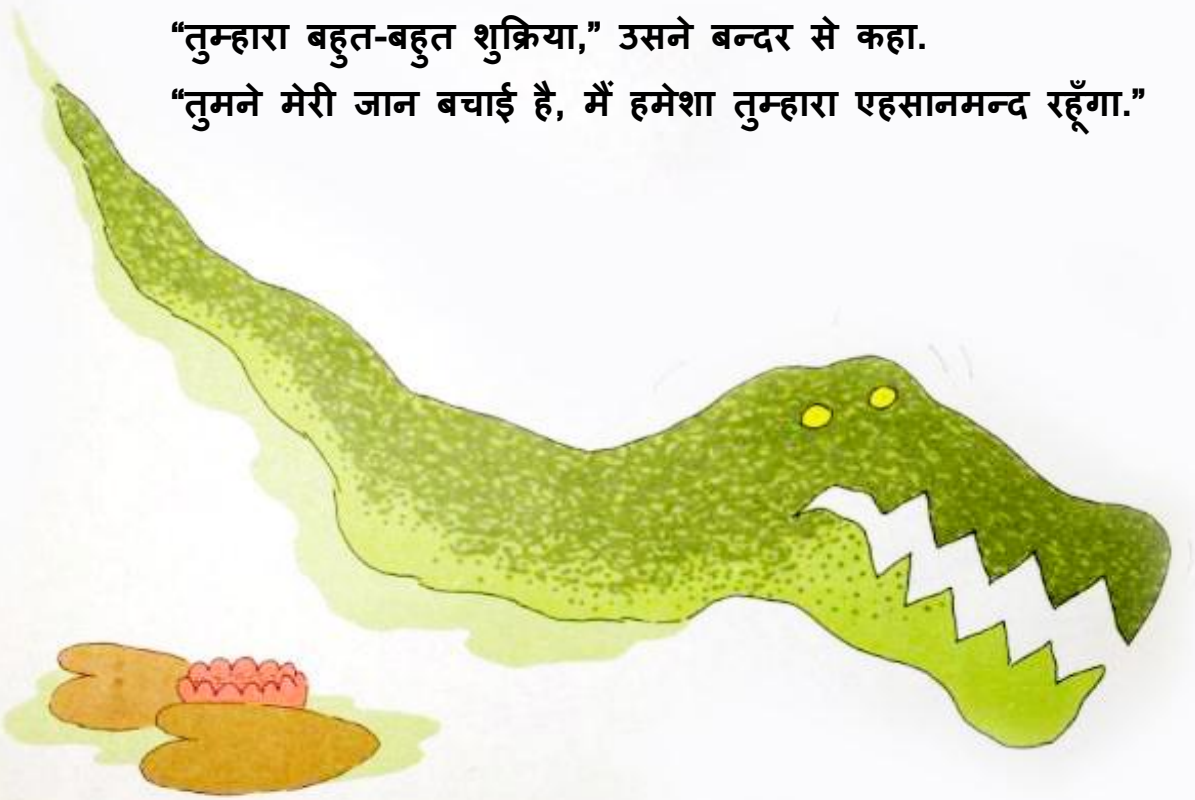

“तुम मेरे लिए एक भलाई का काम कर सकते हो,” बन्दर ने कहा. “तुम अपने पिताजी को मनवाकर केले के और पेड़ लगवा सकते हो, जिससे बंदरों को खाने को खूब केले मिलें. अगर तुम कभी मुझे केले के पेड़ों पर देखो, तो अपनी आँखें बंद कर लेना जैसे तुमने मुझे देखा ही न हो. यह बात किसी को मत बताना.”

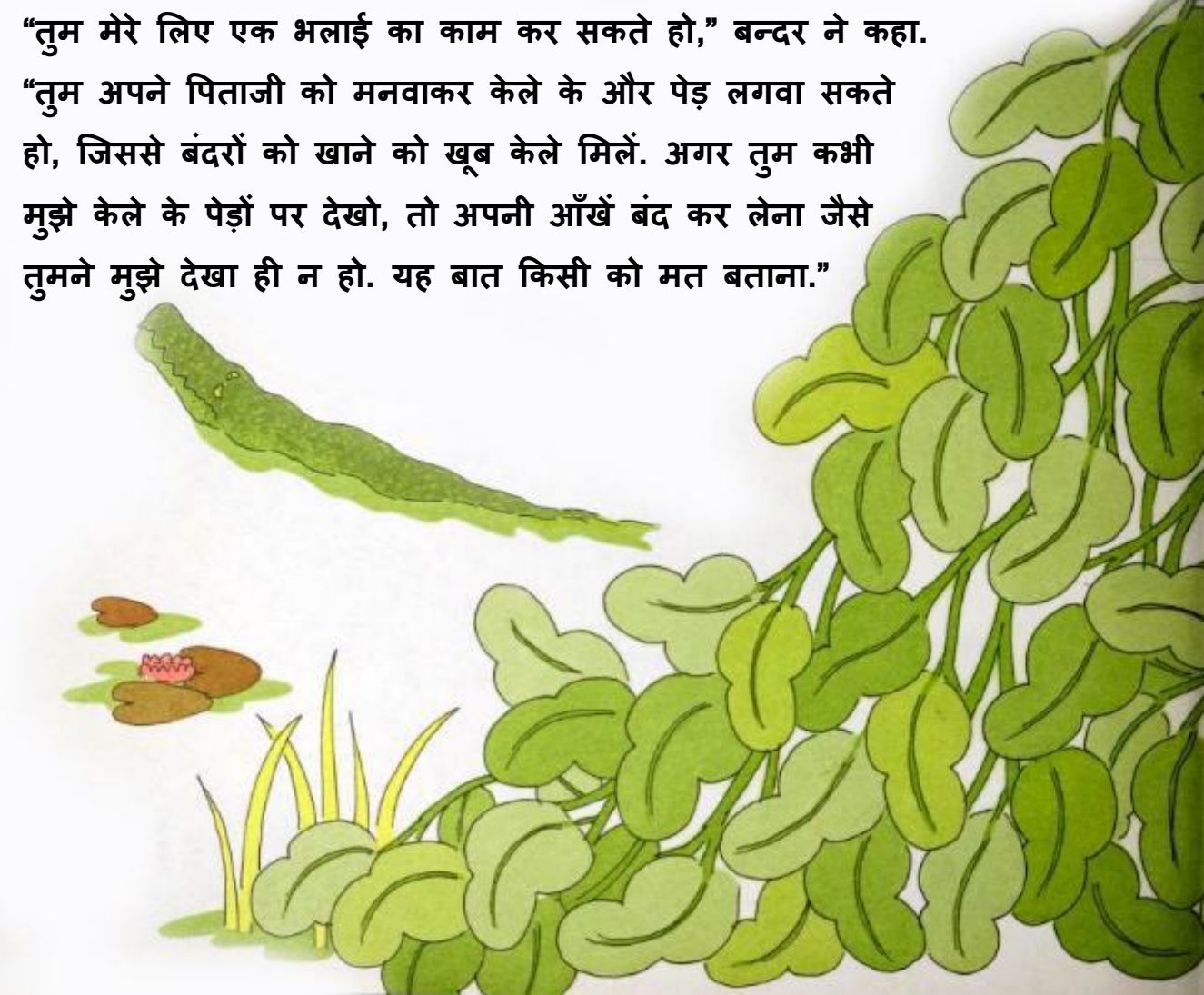

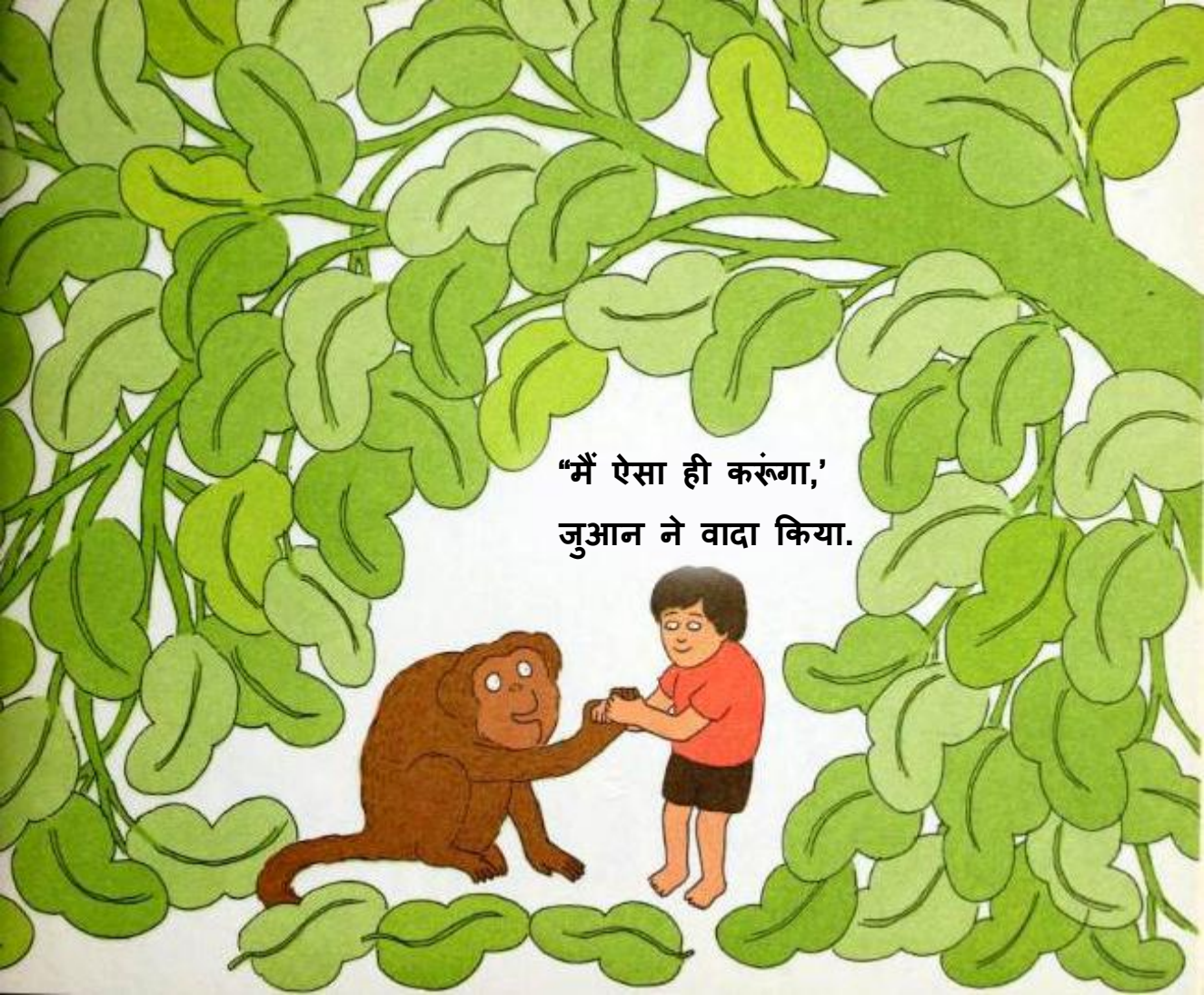
“मैं ऐसा ही करूंगा,’
जुआन ने वादा किया.

अंत